'डाक पंजियन सं. Jaipur city/223/2015-17
स.प.सं. 66332/97

पथ-प्रेरक

पाक्षिक

वर्ष 21 अंक 14 4 अक्टूबर, 2017 कुल पृष्ठः 8 एक प्रतिः रुपए 7.00 वार्षिक : रुपए 150/-

सामाजिक न्यास हैं आपकी उपलब्धियां : रोलसाहबसर

पूज्य तनसिंह जी ने कहा कि मेरी समस्त असाधारणताएं सामाजिक न्यास हैं जिनका हिताधिकारी संपूर्ण समाज हैं। उनकी यह बात समाज के हर विशिष्टि व्यक्ति के लिए आदर्श वाक्य है। आपने सबने अपनी क्षमताओं को बढ़ाकर विशिष्ट उपलब्धियां हासिल की हैं, अधिकारी बने हैं तो आपको इस आदर्श वाक्य को चरितार्थ करना चाहिए। अभी आपकी चर्चा में मैंने आपकी ऐसी भावना को महसूस किया यह प्रसन्नता का विषय है। विगत 23 सितंबर की सायं संघ के केन्द्रीय कार्यालय संघशक्ति में राजस्थान प्रशासनिक सेवा में विगत 2007 के बाद चयनित अधिकारियों के स्नेहमिलन को संबोधित करते हुए माननीय संघ प्रमुख श्री ने उपर्युक्त बात कही। उन्होंने कहा कि मेरी चाह थी कि सभी राजपूत अधिकारी एक साथ बैठकर संस्थागत रूप से अपनी विशिष्टताओं का समाज में प्रसार करें और समाज के युवाओं के लिए मार्गदर्शक बनें। आपकी चर्चा में यह स्पष्ट होता है कि आप गंभीरता पूर्वक इस विषय में चिंतन कर रहे हैं यह प्रसन्नता का विषय है। उन्होंने क्षत्रियत्व की परिभाषा देते हुए बताया कि क्षत्रिय के सात गुणों में से अंतिम ईश्वरीय भाव को भूलने के कारण हम पूर्वजों द्वारा बनाये स्थान से च्युत हुए इसलिए आप अपने जीवन में इसे चरितार्थ करें। आप जहां भी पदस्थापित रहें सभी के प्रति ईश्वरीय भाव रखें, केवल राजपूतों का काम करना ईश्वरीय भाव नहीं है बल्कि आप के अधिकार क्षेत्र में आने वाले हर व्यक्ति को न्याय मिल सके, ऐसा प्रयास करना ईश्वरीय भाव है। आज अनेक लोग अपने स्तर पर श्रेष्ठ काम कर रहे हैं लेकिन ऐसे सभी श्रेष्ठ लोगों को संघबद्ध होना आवश्यक है। नेक लोग एक बनेंगे तो संसार में उस संगठित शक्ति के बल पर न्याय की व्यवस्था स्थापित होगी। यदि एक होने वाले लोग नेक नहीं होंगे तो ऐसा संगठन राक्षसी संगठन हो जाएगा। इसलिए आवश्यक है कि हम एक बने लेकिन उससे भी पहले आवश्यक है कि हम नेक भी बनें। प्रार्थना के साथ प्रारंभ हुए कार्यक्रम में पहले सभी ने अपना परिचय दिया। परिचय के पश्चात् कार्यक्रम के आयोजक बैच की तरफ से दलपतसिंह गुड़ा केशरसिंह ने सभी का अभिनंदन किया। संघ के वरिष्ठ स्वयं सेवक महावीरसिंह सरवड़ी ने संघ की स्थापना से लेकर अब तक का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत करते हुए संघ की गतिविधियों, कार्यप्रणाली, कार्यालयों आदि की जानकारी प्रस्तुत की। उन्होंने बताया कि पूज्य तनसिंह जी ने संघ को यह सोच दी कि विरोध से विचलित हुए बिना निरंतर कर्मशील रहना है। संघ उस सीख के अनुरूप अपनों के ही विरोध के बीच निरंतर प्रवाहमान है और समाज में सभी पहलुओं पर पूज्य तनसिंहजी द्वारा स्थापित मापदण्डों के अनुसार काम कर रहा है। ➡ (शेष पृष्ठ 2 पर)

सैंकड़ों गांवों के हजारों शिविरार्थियों ने लिया प्रशिक्षण

(विस्तृत समाचार पृष्ठ 3 पर)

साधन पर संकल्प की विजय के प्रतीक

17 अक्टूबर : श्रद्धेय आयुवानसिंह जयंती विशेष

आगामी 17 अक्टूबर को हम सब हमारे द्वितीय संघ प्रमुख श्रद्धेय माट्साब आयुवानसिंह जी की 97 वीं जयंती मानने जा रहे हैं। कुछ शाखाओं ने भारतीय पंचांग अनुसार अश्विन शुक्ला पंचमी को उनकी जयंती मनाई। श्रद्धेय माट्साब बहुमुखी प्रतिभा के धनी व एक विरले व्यक्तित्व थे जिन्होंने समाज की तत्कालीन तरूणाई को आश्चर्यजनक रूप से प्रभावित किया। उनके व्यक्तित्व का एक विशेष पहलु था उनकी संकल्प शक्ति। उनकी ईच्छा शक्ति का ही परिणाम था कि उन्होंने समाज को उसके स्वभाव के विपरीत अहिंसक आंदोलन का रास्ता दिखलाया और एक नहीं बल्कि अनेक आंदोलनों में अहिंसक तरीके से तात्कालिक पूर्वाग्रही सरकार को झुकने को मजबूर किया। उनकी संकल्प शक्ति का एक शानदार उदाहरण भुस्वामी आंदोलन के प्रारंभ की घोषणा का समय है। संघ के किशनगढ़ ओटीसी शिविर में आंदोलन की योजना बनी और शिविर समाप्त कर जयपुर आकर आंदोलन की घोषणा करनी थी जब किशनगढ़ से रवाना हुए तब उनकी जेब में मात्र 13 रूपये थे जो जयपुर पहुंचने पर किराया आदि खर्च करने के बाद 5 रूपये ही बचे। विचार करें कि जिसकी जेब में मात्र 5 रूपये हों वह आजादी बाद आजाद भारत की सरकार के खिलाफ सरकार के मंसूबों को बदलने के लिए अहिंसक आंदोलन का आगाज करता है और पूरे आंदोलन को सफलता पूर्वक अंजाम देता है। हम लोग हर छोटे मोटे कामों में साधनों की कमी का रोना रोकर अपने आपको बचा लेते हैं ऐसे में उनके जीवन का यह उदाहरण साधनों पर संकल्प की जीत का प्रतीक है।

➡ (शेष पृष्ठ 7 पर)

(पृष्ठ एक का शेष)

सामाजिक...

कार्यक्रम के आयोजक मण्डल के वरिष्ठ सदस्य एवं केबीनेट मंत्री गजेन्द्रसिंह खींवसर के ओएसडी महेन्द्रप्रतापसिंह भाटी ने कार्यक्रम की पृष्ठभूमि एवं भूमिका बताते हुए कहा कि हमारे सामने भविष्य में आने वाली पीढ़ी के सामने पहचाने जाने के दो मार्ग हैं। या तो हम आज की परिस्थितियों के बीच उनके लिए आगे बढ़ने के मार्ग को प्रशस्त करने वालों के रूप में जाने जाएं या स्वयं की स्थिति का केवल अपने लिए उपयोग कर खपने वालों के रूप में जाने जाएं। निर्णय हमें स्वयं को करना है। आज का कार्यक्रम इसी पीड़ा की उपज है। हमें विचार करना है कि हम हमारे इस प्रयास को किस प्रकार संस्थागत रूप दे सकते हैं? हम हमारे समाज की प्रतिभाओं को किस प्रकार हमारे मार्ग पर ला सकते हैं? किस प्रकार हम निजी क्षेत्र में रोजगार चाहने वालों को एवं रोजगार देने वालों को एक मंच उपलब्ध करवा सकते हैं? किस प्रकार हम समाज के लोगों के वैध कामों में सहयोग देकर हमारी स्थिति का अधिकतम लाभ उपलब्ध करवा सकते हैं? इसके उपरांत सामूहिक चर्चा हुई जिसमें सभी ने अपने अपने सुझाव प्रस्तुत किए। केवल वाट्सएप समूह में भेजे गए संदेश से सूचना पाकर बैठक में आने वाले मध्यप्रदेश के रीवां में पदस्थापित आईपीएस अधिकारी अमन सिंह राठौड ने बताया कि समाज में सकारात्मकता के प्रसार की आवश्यकता है। हम युवाओं से अधिकाधिक संपर्क कर नकारात्मकता के कारण आई निराशा को दूर करें। इनके अतिरिक्त

मांडलगढ़ उपखण्ड अधिकारी गोपालसिंह शेखावत, जालोर उपखण्ड अधिकारी राजेन्द्रसिंह सिसोदिया, रीको में पदस्थापित वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी लक्ष्मणसिंह शेखावत, सिणधरी उपखण्ड अधिकारी महावीरसिंह, रानीवाड़ा उपखण्ड अधिकारी हनुमानसिंह राठौड़, भिनाय उपखण्ड अधिकारी राजेन्द्रसिंह शेखावत सहित लक्ष्मणसिंह जसोल, देवेन्द्रसिंह परमार, वीरेन्द्रसिंह शेखावत, देशराजसिंह, पुष्पाकंवर, नीतू कंवर, भारतीय कर सेवा के ऋषिराज सिंह चौहान सहित सभी अधिकारियों ने अपने सुझाव साझा किए। इन सभी ने श्री क्षत्रिय युवक संघ के मार्गदर्शन में इसके संगठनात्मक विस्तार का भूमिका में बताये गए कामों में सहयोग लेने, जिला स्तर पर समन्वय के लिए टीम बनाने, निजी क्षेत्र में रोजगार की संभावनाओं की तलाश करने, अधिकारी वर्ग के अतिरिक्त अन्य नौकरियों की तैयारी करवाने, आर ए एस, आई ए एस आदि में प्रारंभिक परीक्षा पास कर चुके युवाओं को प्रशिक्षण एवं आर्थिक सहायता उपलब्ध करवाने, सामाजिक समारोहों में अधिकाधिक भागीदार होने, अन्य जातियों के अधिकारियों से मधुर संबंध बनाने सहित अनेकों उपयोगी सुझाव दिए। अंत में संघ प्रमुख श्री के उद्बोधन से पहले महेन्द्रप्रतापसिंह ने सभी सुझावों को संकलित करते हुए बताया कि सभी वरिष्ठ जनों से विचार कर इन प्रयासों को संस्थागत रूप दिया जाएगा एवं सोसायटी रजिस्टर्ड करवायी जायेगी। साथ ही रोजगार देने वाले एवं राजेगार के इच्छुक लोगों को एक मंच पर लाने के लिए एक मोबाईल एप तैयार किया जाएगा और इसके लिए कल ही संघ के वरिष्ठ स्वयं सेवक पवनसिंह बिखरणिया के साथ बैठक रखी है। सभी उपस्थित लोगों से एक फार्म भरवाया गया है जिसमें मार्गदर्शन कार्यक्रमों के लिए उनकी उपलब्धता पूछी गई है, आपके द्वारा दी गई सूचनाओं के आधार पर एक नियोजित कार्यक्रम बनाकर सूचित किया जाएगा। माननीय संघ प्रमुख श्री ने संघ के शिविरों में शिविरार्थियों के लिए एक कालांश इस प्रकार के मार्गदर्शन के लिए उपलब्ध करवाने की स्वीकृति दी है उसके लिए योजना बनाकर संबंधित को सूचित किया जाएगा। श्री क्षत्रिय युवक संघ के कर्मचारी प्रकोष्ठ के साथ समन्वय कर धरातल पर काम किया जाएगा। कार्यक्रम के बाद स्नेह भोज के दौरान भी इस संबंध में अनौपचारिक चर्चाएं की गई।

अपेक्षा से अधिक भागीदारी

इस स्नेहमिलन में आयोजकों को लगभग 50 अधिकारियों के शामिल होने की संभावना थी लेकिन संख्या 100 से अधिक रही एवं पहली बार इस प्रकार के कार्यक्रम में पहुंचे अधिकारी प्रसन्न एवं उत्साहित दिखे। मात्र वाट्सएप संदेश पर रींवा (मध्यप्रदेश) से इस कार्यक्रम में शामिल होने आये आई पी एस अमनसिंह की उपस्थिति ने सभी को प्रेरणा दी। पहली बार संघ के निकट आये अनेक अधिकारी अनेक पूर्व धारणाओं के विपरीत वातावरण पाकर प्रफुल्लित हुए।

महिलाओं की उत्साहजनक भागीदारी : पहली बार इस प्रकार के कार्यक्रम में 20 से अधिक महिला अधिकारी शामिल हुईं जो आयोजकों के लिए प्रेरणादायी रहा। महिला अधिकारियों से अलग से भेंटकर संघ प्रमुख श्री ने उनका परिचय जाना एवं उन्हें संघ के कार्यक्रमों व शिविरों में आकर बालिकाओं व महिलाओं के साथ अपने अनुभव साझा करने को कहा।

साधना...

यह एक उदाहरण ही नहीं बल्कि उनका पूरा जीवन इस जीत का प्रतीक है। उन्होंने कभी अपनी संकल्प शक्ति पर साधनों की कमी को हावी नहीं होने दिया इसलिए तो उन्होंने 17 अक्टुबर 1920 को एक साधारण राजपूत परिवार में जन्म लेकर 7 जनवरी 1967 तक के 47 वर्ष के जीवन में समाज के सामान्य व्यक्ति से लेकर राजा महाराजाओं को अपने पीछे चलने को उद्यत कर दिया। पूज्य तनसिंहजी के अनुसार वे इस युग में एक चुनौती के रूप में आये थे। हम सब उनके 47 वर्ष के छोटे से जीवन को देखें तो उन्होंने सदैव साधनों के अभाव को अंगूठा दिखाते हुए अपनी संकल्प शक्ति के बल पर अपनी इस चुनौति को पेश किया।

'गुरु शिखर से' (विविध विषयों का कॉलम)

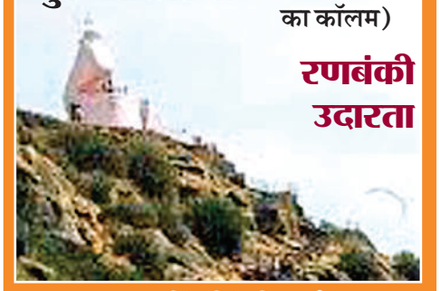

रणबंकी उदारता

स्वरूपसिंह झिंझनियाली

राजस्थान का इतिहास राजपूतों की शौर्य गाथाओं से भरा पड़ा है। वे जनप्रिय, क्षमाशील, दयालु और मानवतावादि गुणों की खान रहे हैं। वे समयानुसार दुश्मनों पर भी दायलु भाव रखते थे। ऐसा एक किस्सा 1750 ई. की घटना का है। मारवाड़ के राजा रामसिंह एवं उनके चाचा बखतसिंह के मध्य सत्ता संघर्ष चल रहा था। बात भीषण युद्ध तक पहुंच गई। इस युद्ध में बखतसिंह के सहयोग के लिए अजमेर के मुगल सुबेदार जुल्फिकार जंग के नेतृत्व में मुगल फौज जोधपुर राजा रामसिंह के विरुद्ध आई। जेठ (जून) का महीना था। दोनों सेनाओं में जमकर जंग चल रही थी। मारवाड़ की तपती बालू रेत, झुलसाने वाली लू एवं प्रचंड गर्मी ने मुगल सेना की हालत बिगाड़ दी। आसपास कहीं पानी भी नहीं उपलब्ध था। प्यास के मारे सैनिकों एवं घोड़ों की दशा बहुत ही शोचनीय हो गई। मुगल सेना ने पानी की तलाश में रण क्षेत्र छोड़ दिया। वे इधर-उधर भटकते हुए महाराज रामसिंह के युद्ध खेमें में आ गए। मुगल सैनिकों एवं घोड़ों की दयनीय स्थित देख रामसिंह ने युद्ध रोक दिया एवं सहृदयता व मानवता दिखाते हुए अपने सैनिकों को इन्हें पानी पिलाने का हुकम दिया। राजपूत सैनिकों ने नजदीक के कुओं से पानी का प्रबंध किया तब जाकर मुगलों की जान में जान आई। इसके बाद उन्होंने मुगल सैनिकों को विरोधी खेमे में जाने को कहा क्योंकि अभी तक युद्ध समाप्त नहीं हुआ था। वि.सं. 1807 (1750 ई.) में घटी इस घटना का उल्लेख फारसी श्रोत 'सहरूल मुताखरीन' में मिलता है। इस श्रोत के लेखक गुलाम हुसैन खां ने अपने भाई ईस्माइल अली खां से सुने वृतान्तानुसार उल्लेख किया है जो स्वयं जुल्फिकार जंग के साथ युद्ध में उपस्थित था। वह लिखता है- 'राजपूतों के चरित्र की श्रेष्ठता बहुत सराहनीय है। ईश्वर इन्हें सुप्रतिष्ठित विचार शक्ति का आशीर्वाद दे।' इस दयालु भावना ने महाराजा रामसिंह जोधपुर को श्रेष्ठता दिलाई। उनकी मानवतावादी भावना ने सांसारिक युद्ध को धर्म युद्ध में परिवर्तित कर दिया। इस घटना ने यह सिद्ध कर दिया कि यद्यपि मारवाड़ में प्रकृति ने पानी की कमी दी है पर यहां के लोगों में मानवता रूपी पानी की कमी नहीं है। शत्रु के प्रति मानवीय व्यवहार के ऐसे दृष्टांत विश्व इतिहास में विरले ही मिलते हैं। उपरोक्त युद्ध में महाराजा रामसिंह ने विजय श्री पाई थी। पानी के संदर्भ में मुगलकालीन एक अन्य घटना का यहां उल्लेख करना प्रासांगिक होगा। मुगल युवराज औरंगजेब ने अपने पिता बादशाह शाहजहां को कैदकर राज्य सत्ता हाथिया ली। शाहजहां को सात वर्ष तक आगरा के किले में कैद रखा। वह बादशाह को मिट्टी के फूटे बर्तन में नपा तुला पानी ही पीने को देता। शाहजहां ने अपने पुत्र बादशाह औरगंजेब को एक पत्र इस तरह लिखा -

ऐ पिसर तूं अजब मुसलमानी
ब पिदरे जिंदा आब तरसाली,
आफरीन बाद हिंदवान सर बार,
मैं देहदं मुर्दारावा दायम आब।

हे पुत्र! तूं विचित्र मुसलमान है, जो अपने जीवित पिता को पीने के पानी के लिए तरसा रहा है। शत-शत बार प्रशंनीय हैं वे 'हिन्दू' जो अपने मृत पूर्वजों को भी श्राद्ध के रूप में पानी देते हैं।

शिविरों एवं स्वयंसेवकों की शृंखला में जुड़ते रहे नाम

14 सितम्बर से 1 अक्टूबर तक राजस्थान, गुजरात, बुंदेलखण्ड में 28 शिविर हुए। जिनमें सैंकड़ों गांवों के हजारों युवाओं ने क्षात्र संस्कृति के मानदण्डों का जीवंत अभ्यास किया।

'क्षत्रिय एक जाति नहीं बल्कि एक नस्ल है जो सदा से इस राष्ट्र की संस्कृति एवं धर्म की रक्षा हेतु हरावल दस्ते के रूप में लड़ती रही है। क्षत्रियत्व स्वयं अपने आप में धर्म है, जिसके ह्रास से संसार में तमोगुण बढ़ता है और सत्य की हानि होती है। पूज्य तनसिंह जी ने इस बात को समझकर हमें क्षत्रियत्व के पथ पर पुनः आरूढ़ करने के उद्देश्य से क्षत्रिय युवक संघ की स्थापना की।' यह बात संघ के केन्द्रीय कार्यकारी प्रेमसिंह रणधा ने कही। वे नाडोल में आयोजित प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर के अंत में आयोजित स्नेहमिलन को संबोधित कर रहे थे। 14 से 17 सितम्बर तक आयोजित इस शिविर में गुडा केसरसिंह, गुडा अखेराज, गुडा आसकरण, आकड़ावास, सुमेर, जवाली, माडपुर, बोलागुड़ा, नारलाई, मारवाड़ जंक्शन, भीमजी गुड़ा, बागोल, घेनड़ी, डुठारिया आदि गांवों से 126 राजपूत युवाओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। शिविर का संचालन महोब्बतसिंह धींगाणा ने किया तथा आयोजन की व्यवस्था हुकमसिंह आकड़ावास ने संभाली। जोधपुर संभाग के शेरगढ़ प्रान्त में देचू पंचायत समिति के सगरा गांव में भी इसी अवधि में एक शिविर सम्पन्न हुआ। शिविर का संचालन चन्द्रवीर सिंह देणोक ने किया। शिविर में 350 से अधिक शिविरार्थियों ने प्रशिक्षण लिया। शिविर की व्यवस्था में अर्जुनसिंह सगरा समेत सभी ग्रामवासियों ने सहयोग किया। प्रांत प्रमुख चन्द्रवीर सिंह भाळू अपनी टीम सहित शिविर हेतु सम्पर्क से लेकर विदाई तक सक्रिय रहे। इसी अवधि में जोधपुर शहर प्रान्त के अन्तर्गत आने वाले गांव सेनाई में भी शिविर का आयोजन हुआ। शिविर का संचालन भवानीसिंह पीलवा ने किया। शिविर में सेनाई, धनवां, सिणली, पीपरली, बेदू, कागनाडा आदि गांवों के अतिरिक्त चौपासनी, तनायन एवं पंचवटी शाखाओं के स्वयंसेवक भी उपस्थित रहे। शिविर की संख्या 124 रही। 14 से 17 सितम्बर के बीच नाचना-फलौदी प्रांत के बीठे का गांव में भी प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न हुआ। गणपतसिंह अवाय के संचालन में भादरिया, दिधु, नाचना, अवाय, ऐटा, खारा, टावरी वाला, पूनमसिंह की ढाणी, नोख, बीठे का गांव, मेड़ी का मगरा, बेरा दैदावता, जैमला आदि गांवों के लगभग 100 बालकों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। शिविर की व्यवस्था लालसिंह व हरिसिंह ने अन्य ग्रामवासियों के साथ मिलकर संभाली। इसी प्रकार जालोर संभाग के सांचोर प्रान्त का प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर सिवाडा गांव में इसी अवधि में सम्पन्न हुआ, जिसमें सिवाड़ा, कारोला, सुरावा, आकोली, चारणीम, पांचला, सांचौर आदि स्थानों से शिविरार्थी सम्मिलित हुए। शिविर में संख्या 125 रही तथा संचालन सुमेरसिंह कालेवा ने किया। शिविर में एक दिन सहयोगियों का स्नेहमिलन भी संपन्न हुआ जिसमें संभाग प्रमुख अर्जुनसिंह देलदरी उपस्थित रहे 14 से 17 सितम्बर की अवधि में ही डूंगरपुर एवं बांसवाड़ा जिलों में भी दो प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न हुए। डूंगरपुर में वणवासा गांव में आयोजित शिविर में वणवासा, पचलासा बडा, पचलासा छोटा, घाटडा, फतेहगढ़, भेकरेड, वालाई आदि गांवों के 75 बालकों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। संचालन गंगासिंह साजियाली ने किया। बांसवाड़ा के करगचिया गांव में आयोजित शिविर में 45 राजपूत बालकों ने भंवरसिंह बेमला के संचालन में विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से क्षत्रियोचित संस्कारों का अभ्यास किया। शिविर के दौरान बालकों द्वारा वृक्षारोपण भी किया गया। विदाई कार्यक्रम में आसपास के गांवों से बड़ी संख्या में समाजबंधु उपस्थित हुए।

इसी अवधि में धनवा, जालेला एवं थोब में भी शिविर आयोजित हुए। सिवाणा प्रांत के धनवा गांव स्थित संत भोलाराम जी मंदिर में आयोजित शिविर में 300 से अधिक राजपूत युवाओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। संचालन मनोहर सिंह नांदला ने किया। संभाग प्रमुख मूलसिंह काठाड़ी भी शिविर में उपस्थित रहे। विदाई कार्यक्रम में महन्त नारायण भारती जी एवं जलाराम जी ने भी शिविरार्थियों को आशीर्वाद प्रदान किया। शिव प्रांत के जालेला गांव में सम्पन्न शिविर का संचालन गणपतसिंह बूठ-जैतमाल ने महिपाल सिंह चूली के सहयोग से किया। 200 से अधिक शिविरार्थियों के लिए व्यवस्था हेतु गुलाबसिंह व महेन्द्र सिंह सहित सभी ग्रामवासियों ने सहयोग किया। कल्याणपुर क्षेत्र के थोब गांव में शिविर का आयोजन गांव के किकाजी-बापजी स्थान पर हुआ। राणसिंह टापरा के निर्देशन में बालोतरा, बायतु व कल्याणपुर क्षेत्र के 80 गांवों के 200 से अधिक बालकों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। इन्हीं चार दिन में सिरोही जिले के भूतगांव में भी शिविर आयोजति हुआ, जिसका संचालन गणपतसिंह भंवराणी ने किया। शिविर में भूतगांव, मनोरा, मांडानी, झाड़ोली, जावाल, उथमन, काणदर आदि गांवों के साथ ही जालोर, सायला, सियाणा व जसवंतपुरा से भी युवा सम्मिलित हुए। दलपतसिंह भूतगांव तथा हड़मत सिंह मनोरा ने आयोजन व्यवस्था संभाली। शिविर में कुल 105 शिविरार्थी उपस्थित रहे। पारासरा-फलसुण्ड में भी इसी अवधि में शिविर आयोजित हुआ, जिसमें क्षेत्र के 250 से अधिक बालकों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। शिविर का संचालन संभाग प्रमुख सांवलसिंह सनावड़ा ने किया। नागौर संभाग के लाडनूं प्रांत के अन्तर्गत आने वाले बैनाथा गांव में 16 वर्ष के अन्तराल से संघ का शिविर आयोजित हुआ, जिसमें श्यामसिंह छापड़ा के संचालन में 82 युवाओं एवं बालकों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। इस प्रकार 14 से 17 सितम्बर तक की चार दिन की अवधि में शिविरों की शृंखला में 13 शिविर और जुड़े, जिनमें सैकड़ों गांवों के 2100 से अधिक बालकों एवं युवाओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया।

21 से 24 सितम्बर तक जोधपुर संभाग के ओसियां-बापिणी प्रान्त का प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर बड़ला बासनी गांव में भरतपाल सिंह दासपां के संचालन में सम्पन्न हुआ। शिविर में बडला, बासनी, जाखण, पीलवा, ओसियां, बझ, कोटेचा, तिंवरी, बेदू, बापिणी, पांचला, पंचवटी, अवाय आदि गांवों के 110 राजपूत युवाओं क्षत्रियोचित संस्कारों का अभ्यास किया। शिविर की आयोजन व्यवस्था गोपालसिंह बड़ला एवं स्वरूपसिंह बड़ला ने अन्य ग्रामवासियों के साथ मिलकर संभाली। इसी प्रकार मध्यप्रदेश के बांदा में भी प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर 23 से 25 सितम्बर तक संपन्न हुआ। रानी लक्ष्मी बाई अन्तर महाविद्यालय के प्रांगण में आयोजित इस शिविर में क्षेत्र के 65 क्षत्रिय बालकों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया।

➡ (शेष पृष्ठ 7 पर)

प्रवचन

नदी स्नान

तेरे खेलों के मैदानों में मैंने हीरे-मोती पाए।

सह गायन चर्चा

विदाई संदेश

संपादकीय

'जो अच्छा हो रहा है उसे भी जानें'

समाज में एक निराशा का वातावरण है। इस तरह का माहौल बनाया जा रहा है कि हमारा सब कुछ लुटता जा रहा है, हम तो संसार से अलग-थलग हो पिछड़ते जा रहे हैं, कोई हमारा साथ नहीं देता है, हमारे राजनेता नाकारा हैं, हमारे समाज के अफसर समाज की सुनते नहीं हैं, सामाजिक संगठन आपस में लड़ते हैं आदि-आदि। आरक्षण ने हमारा सब कुछ छीन लिया है, हमें नौकरी मिलती ही नहीं है, सब ओर हमारे विरोधी हैं, राजनीति में हम पिछड़ गए हैं और इसी प्रकार की अनेक बातें प्रायः हमारे समाज के लोग सभा समारोह या मरण-परण में जब भी एकत्र होते हैं, करते हैं। इसी नकारात्मकता का परिणाम है कि हमारे समाज का युवा प्रारम्भ से ही अपने आसपास निराशा का वातावरण पाता है, उसके मन में व्यवस्था के प्रति आक्रोश पनपता है और उसी आक्रोश के परिणाम स्वरूप वह सदैव विद्रोही बना रहता है। कुछ लोग समाज के नाम पर उसके उस आक्रोश का उपयोग करते हैं और उसका परिणाम हाल ही में घटी घटनाओं से स्पष्ट होता है। ऐसे में समाज के जिम्मेदार लोगों को चाहिए कि वे उन सकारात्मक बातों को समाज के सामने पेश करें जो समाज के लोगों को व्यवस्था के खिलाफ नहीं बल्कि व्यवस्था के साथ आगे बढ़ने को प्रेरित कर सके। उन्हें बताया जाना चाहिए कि जबसे हमारे युवाओं ने प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी गंभीरता से प्रारम्भ की है, आशातीत परिणाम आने लगे हैं। विगत दिनों लगभग 10 वर्ष पहले राजस्थान प्रशासनिक सेवा में चयनित एक अधिकारी ने बताया कि उनके साथ तैयारी करने आए समाज बंधुओं में से कोई बेरजोगार नहीं है। सभी अच्छे पदों पर कार्यरत हैं। विगत दस वर्षों के राजस्थान प्रशासनिक सेवा के परिणाम को देखें तो लगभग 150 युवा प्रशासनिक अधिकारी बने हैं। वे भी उसी व्यवस्था में से निकले हैं जहां आरक्षण आदि बाधाएं उपस्थित हैं। समाज के उन सफल युवाओं की कहानी बताई जानी चाहिए जिन्होंने सभी विपरीत परिस्थितियों के बावजूद सफलता के झंडे गाड़े हैं। हमारे समाज से उच्च पदों पर पहुंचे लोगों की शिकायत करने वालों को यह भी बताया जाना चाहिए कि एक युवा इंजीनियर ऐसे भी हैं जिन्होंने अपने मार्गदर्शन में समाज के इंजीनियरिंग कर चुके 200 से अधिक युवाओं का अच्छे पदों पर प्लेसमेंट करवाया है। ढूंढ़ने जाएंगे तो ऐसे अनेक युवा मिल जाएंगे जो उदात्त सामाजिक भाव से इस प्रकार के कार्य कर रहे हैं। उन्हें बताया जाना चाहिए कि आज भी प्रदेश के अनेक गांव ऐसे हैं जहां सामान्य की सीट आने पर राजपूत ही सरपंच बनता है। आज भी टिकिट मिलने पर हमारा जीत का प्रतिशत अन्य जातियों से बहुत अधिक है। आजादी के बाद से ही राजस्थान विधानसभा में हमारी उपस्थिति 10 प्रतिशत के लगभग बनी रही है। आज भी केन्द्र सरकार में राजस्थान से केवल हमारी ही कौम के दो मंत्री हैं। उन्हें यह भी बताया जाना चाहिए कि नौकरियों एवं अन्य अवसरों में पिछड़ने का कारण केवल आरक्षण ही नहीं है बल्कि अवसरों का लाभ नहीं लेने की हमारी उदासीनता भी है। स्वास्थ्य एवं शिक्षा के प्रति हमारी उदासीनता भी है इसलिए हमें व्यवस्था को दोष देने की अपेक्षा हमारी उदासीनता को दूर करने पर बल देना चाहिए। हमें इस सकारात्मकता को भी प्रचारित करना चाहिए कि हाल ही के दिनों में अनेक सामाजिक विषयों पर हमारे समाज के परस्पर विरोधी संगठनों ने भी साथ मिलकर काम किया है एवं सरकारों को झुकाने में सफल हुए हैं। हमें इस ओर भी ध्यान देना चाहिए कि निजी क्षेत्र में हमारे अनेक युवा सफलता के झंडे गाड़ रहे हैं। स्वभाव के विपरीत होने के बावजूद व्यवसाय के क्षेत्र में हमारी उपस्थिति दर्ज होने लगी है और अनेक छोटे-छोटे कस्बों में सैकड़ों व्यवसायी तैयार हुए हैं जो अपने परिवार का पेट पालने के साथ-साथ सामाजिक कार्यों में भी उचित भागीदारी निभाते हैं। हम प्रायः कहते हैं कि हमारे समाज के अधिकारी समाज के प्रति उदासीन रहते हैं जबकि वस्तुस्थिति यह है कि समाज चिंतन के लिए बुलाने पर अपेक्षा से दुगुने अधिकारी आकर गहन चिंतन करते हैं। अनेक युवा विपरीत परिस्थितियों के बावजूद परदेस में जाकर सफल व्यवसायी बने हैं। इस प्रकार जिन भौतिक उपलब्धियों के लिए प्रायः हम रोना रोया करते हैं उन सभी में हमने दमदार उपस्थिति दर्ज करवानी प्रारम्भ की है। देरी से जागने के कारण अन्यों की अपेक्षा हमारी संख्या कम हो सकती है लेकिन प्रगति की दर निश्चित रूप से अन्यों से कहीं ज्यादा है और ये सभी आशा के संकेत हैं निराशा के नहीं। इसलिए समाज में व्यवस्था को गालियां देकर युवाओं की निराशा की बारूद से खेलने वालों को इस ओर भी देखना चाहिए। यह तो भौतिक उपलब्धियों की बात है लेकिन आध्यात्मिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, नैतिक व अन्य ऐसी ही उपलब्धियों की बात करें तो हम आज भी अन्यों से इक्कीस ही हैं और यह हमारी निराशा और नकारात्मकता को मिटाने के लिए पर्याप्त कारण हैं। आज के इस भौतिकवादी युग में भी त्याग और निःस्वार्थ सेवा के अनुपम उदाहरण हमारे समाज में देखें जा सकते हैं। श्री क्षत्रिय युवक संघ का विगत 70 वर्षों से निरन्तर उर्ध्वाधर एवं क्षितिजीय विस्तार इस बात का सशक्त प्रमाण है। इसलिए केवल विरोध, नकारात्मकता एवं निराशा की बात करने वालों से आग्रह है कि जरा इधर भी देखें, समाज में बहुत कुछ अच्छा घटित हो रहा है और हमारी नजरें अच्छे की तरफ गई तो समाज में अच्छे का विस्तार होगा, प्रेरणा का संचार होगा और हम हमारे जन्मजात गौरव का अहसास कर सकेंगे।

देवी पूजा से दीपावली तक

दीपावली विशेष

महापुरूष, वैज्ञानिक आदि सभी कहते हैं कि प्रकृति विकासमान है, निरंतर विकास कर उत्तरोत्तर श्रेष्ठता को प्राप्त हो रही है। सर्वश्रेष्ठ ईश्वर है, इस दृष्टिकोण से ईश्वर की ओर बढ़ना ही वास्तविक विकास है। हमारी संस्कृति में इस विषय को सदा से ही अंगीकार किया गया, इसलिए हमारी सभी परंपराएं- रीति रिवाज, रहन-सहन, वार-त्यौंहार आदि सभी उस ओर बढ़ने के संकेत करते हैं। आगामी दिनों में हम हमारी संस्कृति का बड़ा त्यौंहार दीपावली मनाने जा रहे हैं। दीपावली का अर्थ है राम का अयोध्या लौटना, राम का राज्याभिषेक होना, राम राज्य की स्थापना होना। लेकिन इस त्यौंहार से पहले हम दशहरा मनाते हैं और उससे पहले नौ दिन तक देवी की उपासना करते हैं। हमने विगत अंक में देखा था कि प्रकृति रूपी माता के गर्भ में बीज रूप में भगवान अपने आपको स्थापित कर सृष्टि की रचना करते हैं। ब्रह्मा पर्यन्त भगवान की समस्त सृष्टि प्रकृति का ही स्वरूप है और इसी प्रकृति की पूजा देवी पूजा है। यही मातृस्वरूपा देवी हमें पिता स्वरूप परमेश्वर का परिचय करवाती है। उसी देवी की हम नवरात्रा में पूजा अर्चना करते हैं। जब हम देवी की पूजा करते हैं तो वह हमें पिता की ओर प्रवाहमान करती है और हमारी इन्द्रियों का जहां तक प्रसार है वहां तक प्रकृति विराजमान है। प्रकृति से परे पिता रूप परमेश्वर का परिचय पाने के लिए इन इन्द्रियों का हरण करना पड़ता है, नियंत्रण करना पड़ता है और इसलिए देवी पूजा के उपरांत दसवें दिन हम दशहरा मनाते हैं जो हमारी इन दसों इंद्रियों के हरण/नियंत्रण का प्रतीक है। इस दिन दशानन मारा जाता है अर्थात हमारे इन्द्रियों का दसों दिशाओं में हो रहा प्रवाह रूक जाता है। जो दस मुख प्रकृति की ओर उन्मुख थे वे देवी स्वरूप प्रकृति की कृपा से परमेश्वर की ओर उन्मुख होते हैं। हम दशहरा या वियजदशमी मनाकर हमारी इन्द्रियों के प्रवाह को परमेश्वर की ओर करते हैं। उनका प्रकृति की ओर प्रवाह रोकने में सफल होते हैं। अपने आप को सृष्टि/प्रकृति से परे की सत्ता के अवतण के लिए तैयार करते हैं और इसी तैयारी का परिणाम है राम का राज्याभिषेक अर्थात हमारे में परमेश्वर का राज्य स्थापित होता है। साधक उनके संरक्षण में आता है और सृष्टि के गुरूत्वाकर्षण से मुक्त होता है। इस प्रकार वह विकास के मूल सूत्र को हासिल कर निश्चित लक्ष्य की ओर परमेश्वर के संरक्षण में गतिमान होता है। आईए प्रकृति रूपी माता एवं परमेश्वर रूपी पिता से प्रार्थना करें कि वे हमारे जीवन में भी देवी पूजा से दीपावली तक की यात्रा का सूत्रपात करने की कृपा करें।

खरी-खरी

अधिकार जताने से पहले...!

विगत दिनों एक सामाजिक संस्था के एक पदाधिकारी का फेसबुक पर संदेश वायरल हुआ कि उनकी संस्था के किसी कार्यक्रम में किसे बुलाना है और किसे नहीं या किसे सम्मानित करना है या किसे नहीं यह तय करने का अधिकार उनकी संस्था की कार्यकारिणी को है, अन्य को नहीं। इसलिए इसके लिए अनावश्यक दबाव नहीं बनाया जाना चाहिए। यह एक उदाहरण है हमारे समाज के उन लोगों का जो हर जगह अपना अधिकार जता कर पंचायती करना चाहते हैं। उनके अनुसार समाज में काम करने वाली हर संस्था उनके अनुसार चलनी चाहिए, वे किसी को कुछ भी सलाह देने को स्वतंत्र हैं, केवल स्वतंत्र ही नहीं हैं बल्कि उनका यह जन्म सिद्ध अधिकार भी है क्यों कि वे भी राजपूत हैं और संस्था भी राजपूतों की है। केवल राजपूत होने मात्र से ही वे अपने आपको इस बात के अधिकारी मानते हैं और अधिकार जताने से बाज भी नहीं आते। उस कार्यक्रम को करने वाले लोगों की परिस्थितियां, कार्यक्रम को करने के उद्देश्य, उक्त संस्था के नियम कायदे एवं कार्यशैली से उनको कोई लेना-देना नहीं होता बल्कि वे तो अपने आप को मालिक समझते हैं और यह अपेक्षा करते हैं कि समाज की संस्था है इसलिए उनकी बात मानी जानी चाहिए। ऐसे लोग केवल अधिकार को ही समझते हैं दायित्व से उनको कोई लेना-देना नहीं होता। निश्चित रूप से समाज की किसी संस्था में हर व्यक्ति को जाने का अधिकार होता है और हर संस्था में ऐसा खुलापन होना चाहिए कि हर व्यक्ति उसका अंग बन सके। कुछ ही लोगों के झुंड द्वारा संचालित संस्था तो वास्तव में सामाजिक भी नहीं होती। यदि किसी संस्था में समाज के आम सदस्य के शामिल होने की छूट नहीं होती तो वह संस्था सही रूप में सामाजिक भी नहीं है। लेकिन यदि कोई संस्था खुलापन रखती है तो उसमें हकपूर्वक अपनी बात रखने को अपना अधिकार समझने वाले व्यक्ति को पहले उस संस्था के प्रति अपने दायित्वों को भी समझना चाहिए। आदर्श स्थिति तो यह है कि उसे केवल दायित्व ही समझना चाहिए। यदि हर व्यक्ति अपने दायित्व का भान रखकर उसे पूर्ण करे तो यह समस्या ही नहीं आएगी।

➡ (शेष पृष्ठ 7 पर)

शिविर सूचना

क्र.सं.	शिविर	समय	स्थान मार्ग आदि
1.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	08.10.2017 से 11.10.2017	**ददरेवा**। जिला चुरू।
2.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	08.10.2017 से 11.10.2017	**भण्डारी**। डीडवाना से साधन उपलब्ध।
3.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	08.10.2017 से 11.10.2017	**बंजारी का देवरा,** अभयपुरा, भीलवाड़ा
4.	प्रा.प्र.शि. (बालिका)	08.10.2017 से 11.10.2017	**जैसलमेर**। राजपूत छात्रावास, जैसलमेर।
5.	प्रा.प्र.शि. (बालिका)	08.10.2017 से 11.10.2017	**महरोली**। जिला सीकर
6.	मा.प्र.शि. (बालक)	08.09.2017 से 14.10.2017	**बहादुरपुरा दूधवा**। बाड़मेर चौहटन सड़क मार्ग पर दूधवा से 5 किमी दूर उ.प्रा. विद्यालय।
7.	मा.प्र.शि. (बालक)	08.10.2017 से 14.10.2017	**नौसर**। (मल्लीनाथजी का मंदिर)। सिणधरी व बालोतरा से बसें उपलब्ध हैं।
8.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	08.10.2017 से 11.10.2017	कैलाश जाली का फार्म हाउस, सूरजपुरा रोड़, सरस डेयरी के सामने, **दौसा**। **सम्पर्क :** महेन्द्रसिंह चावंडेडा-9571179921
9.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	08.10.2017 से 11.10.2017	**मूण्डरू** जिला-सीकर।
10.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	08.10.2017 से 11.10.2017	कुंजलमाता मंदिर, **डेह**। नागौर से लाडनूं रोड पर नागौर से 30 किमी. दूर।
11.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	09.10.2017 से 12.10.2017	**गोकुल**। बज्जु से सुबह 8 बजे व दोपहर 1.30 बजे एवं बीकानेर से दोपहर 2.00 बजे बस उपलब्ध है।
12.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	09.10.2017 से 12,10.2017	**लूद्रवा**। जैसलमेर पूनमनगर मार्ग पर स्थित।
13.	मा.प्र.शि.	09.10.2017 से 15.10.2017	**ऋषि मगरी**। चित्तौड़-उदयपुर वाया मावली मार्ग पर पाडोली माताजी उतरे। वहां से 2 किमी दूर स्थित है।
14.	मा.प्र.शि.	09.10.2017 से 15.10.2017	**गुड़ा श्यामा**। (धारेश्वर महादेव मंदिर)। सोजत रोड (पाली) से गुडा श्यामा के लिए हर घंटे बस उपलब्ध।
15.	मा.प्र.शि.	09.10.2017 से 15.10.2017	**राजमथाई**। पोकरण से बस उपलब्ध है।
16.	प्रा.प्र.शि. (बालिका)	13.10.2017 से 16.10.2017	बीजेएस स्कूल, **जोधपुर**।
17.	प्रा.प्र.शि. (बालिका)	15.10.2017 से 17.10.2017	**सोनू** (जैसलमेर)।
18.	प्रा.प्र.शि. (बालिका)	21.10.2017 से 24.10.2017	**पोकरण** (जैसलमेर)।
19.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	21.10.2017 से 24.10.2017	**चितावा**। (नागौर) कुचामन-सीकर मार्ग पर स्थित।
20.	मा.प्र.शि. (बालक)	23.10.2017 से 29.10.2017	वडासण-कड़ा माणसा रोड। **मेहसाणा**।
21.	मा.प्र.शि. (बालिका)	13.10.2017 से 16.10.2017	**काणेटी,** बालिका प्राथमिक शाला। अहमदाबाद से 20 किमी दूर साणंद से 2 किमी दूर काणेटी।
22.	बाल शिविर	28.10.2017 से 29.10.2017	तपोभूमि विद्यापीठ **बुडीवाड़ा**। बालोतरा-पादरू मार्ग पर। बालोतरा से 18 किमी दूर।
23.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	02.11.2017 से 05.11.2017	क्षत्रिय सभा भवन **धरियावद**। जिला प्रतापगढ़।
24.	बाल शिविर	04.11.2017 से 05.11.2017	सोलर इंटरनेशनल स्कूल। **सांचौर** (जालोर)।

- जोध्यासी शिविर जो 8 से 11 अक्टूबर तक होना सूचित किया गया था, वह 28 सितम्बर से 1 अक्टूबर तक सम्पन्न हो चुका है।
- 28 सितम्बर से 1 अक्टूबर तक केकड़ी में होना सूचित किया गया शिविर अभी स्थगित कर दिया गया है।

शिविर में आने वाले युवक काला नीकर, सफेद कमीज, काली जूती व युवतियां केसरिया सलवार कमीज, कपड़े के काले जूते, मौसम के अनुसार बिस्तर (एक परिवार से दो जने हों तो अलग-अलग), पेन, डायरी, टॉर्च, रस्सी, चाकू, सूई-डोरा, कंघा, लोटा, थाली, कटोरी, चम्मच, गिलास साथ लेकर आवें। संघ साहित्य के अलावा कोई पत्र-पत्रिका, पुस्तकें एवं बहुमूल्य वस्तुएं साथ ना लावें।

राजेन्द्रसिंह बोबासर, शिविर कार्यालय प्रमुख

सार संकलन

स्वरूपसिंह जिंझनीयाली

श्री विश्वनाथ प्रतापसिंह मांडा (इलाहाबाद) के राजा थे। इनका विवाह मेवाड़ के चुंडावतों के ठिकाने देवगढ़ (राजसमन्द) में हुआ। आपने अपनी सारी जमीन विनोबा भावे के भूदान यज्ञ में दे दी थी। आप उत्तरप्रदेश के मुख्यमंत्री रहे। केन्द्र की सरकारों में मंत्री रहे। आप का भारत सरकार के वित्तमंत्री एवं रक्षा मंत्री का कार्यकाल मुख्य रूप से जाना जाता है। आपने बोफोर्स तोप घोटाले पर राजीव गांधी सरकार से इस्तीफा देकर जनता दल बनाया एवं कांग्रेस को हराकर भारत के प्रधानमंत्री बने। आप कवि हृदय भी थे। आपकी कुछ कविताओं की पंक्तियां इस तरह है :

मैं और वक्त
काफिले के आगे-आगे चले
चौराहों पर, मैं एक और मुड़ा
बाकी वक्त के साथ चले गए।

■ ■ ■

टुकड़े-टुकड़े हूं
फिर भी कीमत वही है,
पहले सिक्का था
अब रेजगारी हूं।

■ ■ ■

तुम मुझे क्या खरीदोगे?
मैं मुफ्त हूं।

■ ■ ■

सब वही है
फिर भी सब वही नहीं
यही तो
हमारी तुम्हारी
कहा कही है

■ ■ ■

आ, लिपट जा
तू, मेरी बदनामी की तरह
दुनिया
बहुत संभालकर
हम दोनों को एक साथ रखेगी

■ ■ ■

श्री अटल बिहारी वाजपेयी प्रखर सांसद उच्च कोटि के वक्ता, विदेश मंत्री, विपक्ष के नेता एवं भारत के भारतीय जनता पार्टी से दो बार प्रधानमंत्री रहे। आप भी कवि हृदय हैं, संसद में सांसदों के जीतकर आने एवं हारकर सदन से चले जाने पर पंक्तियां कहीं :

जो कल थे, वे आज नहीं होंगे।
जो आज है, वे कल नहीं होंगे।
होने न होने का क्रम इसी तरह चलता रहेगा।
हम हैं, हम रहेंगे, यह भ्रम भी सदा पलता रहेगा।

■ ■ ■

श्री हरिशंकर परसाई हिन्दी साहित्य के माने हुए व्यंग्यकार रहे हैं। आपकी रचनाएं पाठ्यक्रम में पढ़ाई जाती हैं। आप वरकाणा (पाली) में एक पब्लिक स्कूल के प्राचार्य भी रहे हैं। आप की राम चरित्र पर व्यंग्य रचना :

इक राम, इक रावणियो।
इक छत्री, एक बामणियो।
इक ने इक की सिया हरी।
बा ने बा की लंका जारी।
बात-बात को बातन्यो।
तुलसी धरद्यो पोथन्यो।

IAS/ RAS
तैयारी करने का राजस्थान का सर्वश्रेष्ठ संस्थान
स्प्रिंग बोर्ड
Spring Board
Springboard Academy, Main Riddi Siddi choraha, Opposite Bank of Baroda, Gopalpura bypass Jaipur
website : www.springboardindia.org

राजस्थानी साहित्य को समृद्ध करने वाले

कालजयी कवि चन्द्रसिंह बिरकाली

राजस्थान की बालू रेत के टिब्बों से घिरी मरुभूमि की आग उगलती गर्मी, तीर सी लगने वाली सर्दी और रिमझिम करती सुहावनी बारिश की अनूठी प्रकृति ने अपने आंचल में अनेक सपूतों को जन्म दिया है। ऐसे ही कालजयी सपूतों में चन्द्रसिंह बिरकाली का नाम है। जिन्होंने मायड़ भाषा राजस्थानी के साहित्य को समृद्ध कर, राजस्थान की अनूठी प्रकृति को देश के कोने-कोने में पहुंचाकर अमर कर दिया। गांवों, चौपालों, खेतों, पनघटों पर बोली जाने वाली भाषा में रचनाओं को जन्म देकर राजस्थानी साहित्य को समृद्ध करने वाले कालजयी कवि चन्द्रसिंह बिरकाली का जन्म हनुमानगढ़ जिले की नोहर तहसील के बिरकाली गांव में 24 अगस्त 1912 एक साधारण राजपूत परिवार में हुआ था। आप असाधारण राजस्थानी काव्य प्रतिभा के धनी थे। जिस प्रकार सम्राट विक्रमादित्य एक विशेष सिंहासन पर बैठकर ही न्याय किया करते थे। उस सिंहासन पर बिराजते ही विक्रमादित्य में न्याय करने की एक विलक्षण न्यायिक प्रतिभा का उदय व संचार हो जाता था। उसी प्रकार से चन्द्रसिंह जी अपने गांव बिरकाली के एक ऊंचे रेतीले टिब्बे पर बैठकर रचनाओं का सृजन किया करते थे। इस टिब्बे पर बैठने के पश्चात ही सरस्वती उनकी जिह्वा पर बिराजती तथा स्वतः ही राजस्थानी भाषा की रचनाएं उनके श्रीमुख से वाणी के रूप में प्रस्फुटित होती। इसी टिब्बे पर बैठकर राजस्थानी भाषा के चहेते इटली के डॉ. एल.पी. टेस्सी टोरी से बिरकाली की भेंट हुई थी। ज्ञात रहे डॉ. टेस्सी टोरी एक इटालियन थे तथा बीकानेर क्षेत्र में इन्होंने दूरदराज में घूम-घूम कर इस क्षेत्र का गहराई से अध्ययन किया। कई ग्रन्थ लिखे जो आज भी बीकानेर के अभिलेखागार में उपलब्ध हैं। इन्होंने बीकानेर रियासत के क्षेत्र को अपनी कर्म स्थली बनाया तथा यहां के जन जीवन का गहराई से अध्ययन किया। ये हिन्दी भाषा व राजस्थानी भाषा के अच्छे जानकार थे। इनको राजस्थानी भाषा अति प्रिय थी इसी कारण से इन्होंने चन्द्रसिंह बिरकाली से राजस्थानी भाषा का कवि होने के नाते मुलाकात की थी। डॉ. टैस्सी टोरी का अन्तिम समय बीकानेर में ही गुजरा तथा यहीं पर उनकी मृत्यु हुी। बीकानेर क्षेत्र के लिए की गई उनकी सेवाओं को चिरस्थाई बनाने के लिए उनकी याद में बीकानेर में पब्लिक पार्क के पास आज भी 'टैस्सी-टोरी' पार्क बना हुआ है।

'बादली' और 'लू' चन्द्रसिंह बिरकाली की दो महान काव्य रचनाएं है। जिन्होंने सारे देश का ध्यान राजस्थान की ओर आकर्षित किया। प्रो. इन्द्रकुमार शर्मा ने 'बादली' और 'लू' का अंग्रेजी भाषा में अनुवाद किया था। इनके अलावा 'डांफर', 'कालजे री कौर', 'मेघदूत' व 'जफरनामो' भी चन्द्रसिंह जी की महत्त्वपूर्ण रचनाएं हैं। उनकी महत्त्वपूर्ण रचना 'लू' का अन्तिम दोहा निम्न प्रकार है :

जीवण दाता बादल्यां थांसूं जीवण पाय।
भल लूंआ बाजो किती मुरधर सहसी लाय।।

अर्थ : मरुधरा को जीवन प्रदान करने वाली बादलियां भी तुमसे (लू से) अपना जीवन प्राप्त करती हैं, अतः लूं ओ, चाहे जितनी चलो, मरुधरा तुम्हारे ताप को स्वैच्छा से सहन करेगी।

चन्द्रसिंह बिरकली 80 वर्ष तक जीये परन्तु वे कुछ वर्ष तक और जीना चाहते थे। एक तो वे बाल्मीकि रचित रामायण का राजस्थानी में अनुवाद करना चाहते थे तथा अपने पैतृक गांव बिरकाली में राजस्थानी भाषा का एक शोध केन्द्र भी खोलना चाहते थे। मायड़ भाषा के इस सपूत के अमरत्व प्राप्त करने से सात दिन पूर्व आकाशवाणी सूरतगढ़ ने एक साक्षात्कार लिया था जो आज इतिहास बन गया है। उन्होंने राजस्थानी भाषा को मान्यता देने के प्रयत्नों के बारे में कहा कि इसमें राजनीति घुस गई है। चन्द्रसिंह बिरकाली 14 सितम्बर 1992 को इस असार संसार को छोड़कर अमरत्व को प्राप्त हो गए थे। जीवन के अंतिम पड़ाव में 11 वर्ष तक वे अपने गांव बिरकाली में ही रहे। राजस्थान के सपूत राजस्थानी भाषा के रचनाकार, राजस्थानी भाषा को अपनी काव्य रचनाओं के माध्यम से समृद्ध बनाकर नई ऊंचाईयों तक पहुंचाने वाले व राजस्थानी भाषा को संवैधानिक मान्यता दिलाने के लिए प्रयासरत रहे इस महान पुरौधा कवि चन्द्रसिंह बिरकाली को शतः शतः नमन्।

भंवरसिंह मांडासी

प्रताप युवा शक्ति की बैठक : प्रताप युवा शक्ति की बैठक जयपुर के करणी पैलेस रोड स्थित राधाकृष्ण मैरिज गार्डन में हुई जिसमें दशहरा उत्सव पर शस्त्र एवं शास्त्र पूजा तथा शक्ति संचलन को लेकर चर्चा की गई। छात्र संघ चुनाओं में विजयी प्रत्याशियों का सम्मान किया गया। भानुप्रतापसिंह खुईयां को प्रदेश महासचिव एवं प्रतापसिंह रावतोत को प्रदेश उपाध्यक्ष की शपथ दिलवाई गई।

देवेन्द्रसिंह राठौड़

श्री देवेन्द्रसिंह पुत्र श्री नाहरसिंहजी राठौड़, गांव ढांढण, हाल हनुमानगढ़ ने कनिष्ठ लेखाकार भर्ती परीक्षा 2013 प्रथम अवसर में उत्तीर्ण की। अभी वें कनिष्ठ लेखाकार सिंचाई विभाग हनुमानगढ में पदस्थापित हैं।

दीपिका कंवर राठौड़

देवेन्द्रसिंह की ही बहन सुश्री दीपिका कंवर ने भी कनिष्ठ लेखाकार भर्ती परीक्षा 2013 प्रथम अवसर में ही उत्तीर्ण की। कनष्ठि लेखाकार पद पर पदस्थापन का इन्तजार है और अभी एडीजे कोर्ट-2, हनुमानगढ़ में क.लि. के रूप में कार्यरत है।

गिरीराजसिंह

वरिष्ठ अध्यापक नरेन्द्रसिंह महेचा निवासी साजियाली एवं हाल निवास हरजी (जालोर) के पुत्र गिरीराजसिंह ने जवाहर नवोदय विद्यालय जसवंतपुरा में अध्ययन करते हुए कक्षा 10 में 10 सीजीपीए हासिल किए हैं।

रमन कंवर

थुंबा निवासी स्व. मोहनसिंह की पुत्री रमन कंवर ने राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की परीक्षा में 83 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

उद्घाटन की तैयारी हेतु बैठक

रानीवाड़ा (जालोर) में नवनिर्मित राजपूत छात्रावास भवन के उद्घाटन एवं सम्मान समारोह के तिथि निर्धारण आयोजन समिति के गठन, प्रचार प्रसार आदि हेतु 24 सितंबर को रानीवाड़ा में बैठक का आयोजन किया गया। बैठक में समाराह के लिए 28 अक्टुबर की तिथि तय की गई एवं आयोजन से संबंधित विभिन्न समितियों का गठन किया गया। बैठक में छैलसिंह रतनपुर, देवेन्द्रसिंह जावीया, विक्रमसिंह पुनासा, अर्जुनसिंह देलदरी, शैतानसिंह भूतेल, पन्नेसिंह चारा, भूपेन्द्रसिंह जाखड़ी आदि ने अपने सुझाव प्रस्तुत किए।

शाखा प्रभारी का प्रवास

संघ के गुजरात क्षेत्र के शाखा विभाग प्रभारी छन्नु भा पच्छेगाम ने तीन दिन तक बनासकांठा क्षेत्र में शाखा निरीक्षण एवं विस्तार हेतु प्रवास किया। इस प्रवास के दौरान पीलूड़ा, वलादर, नारोली, करबुण, थराद, ईढाटा, ढीमा, आछुवा, नालोदर, गोलगाम, बुकणा आदि गांवों में नई शाखाएं प्रारंभ करने के लिए संपर्क किया गया। पहले से लग रही शाखाओं के लिए उचित दिशा निर्देश दिए। थराद छात्रावास के युवाओं से मिलकर शाखा लगाने को प्रेरित किया एवं भारत पाक सीमा पर अंतिम गांव तक संघ का संदेश पहुंचाया।

हुकमसिंह बडोड़ागांव को मातृशोक

श्रीमती अणछ कंवर

संघ के स्वयंसेवक हुकम सिंह बडोड़ा गांव (जैसलमेर) की माता जी **श्रीमती अणछ कंवर** धर्मपत्नी स्वर्गीय इंद्रसिंह जी भाटी का स्वर्गवास 28 सितम्बर 2017 को प्रातः 4.15 बजे हो गया है। ईश्वर उनकी आत्मा को शांति प्रदान करे। पथ प्रेरक परिवार अपनी संवेदना प्रकट करता है।

चैनसिंह साथिन को मातृशोक

श्रीमती भंवरसिंह

संघ के स्वयंसेवक चैनसिंह साथिन (जोधपुर) की माताजी **श्रीमती भंवरसिंह** का 15 सितम्बर को देहांत हो गया। पथप्रेरक परिवार शोक संतप्त परिवार के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करता है एवं हुतात्मा की शांति के लिए परमेश्वर से प्रार्थना करता है।

(पृष्ठ तीन का शेष)

सहगायनों का आनंद

शिविर का संचालन श्यामसिंह चिरनोटिया ने जितेन्द्रसिंह सिसरवादा के सहयोग से किया। राकेश सिंह गौड़ ने शिविर स्थान उपलब्ध करवाया एवं नरेन्द्रसिंह परिहार एवं सुरेन्द्रसिंह गौड़ ने व्यवस्था में सहयोग किया। मध्य गुजरात संभाग के मेहसाणा प्रांत के कडा गांव स्थित रावल ना रजवाड़ा स्थान पर एक प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर 23 से 25 सितम्बर तक आयोजित हुआ। शिविर में 91 बालकों ने वरिष्ठ स्वयंसेवकों के निर्देशन में प्रशिक्षण प्राप्त किया। शिविर का संचालन दिग्विजयसिंह पलवाडा ने छनुभा पछेगाम के सहयोग से किया। शिविर की आयोजन व्यवस्था गजेन्द्रसिंह एवं प्रदीपसिंह कडा ने सभी ग्रामवासियों के सहयोग से संभाली। नवरात्रा में आयोजित शिविर के दौरान शिविरार्थियों ने सहगीतों पर गरबा भी किया।

21 सितंबर से 24 सितंबर तक चुरू जिले पाबुसर गांव में शिविर हुआ जिसका संचालन राजेन्द्रसिंह आलसर ने किशनसिंह गौरीसर, मोहनसिंह फ्रांसा, मानसिंह पाबूसर, विक्रमसिंह आदि के सहयोग से किया। कल्याणसिंह मेलूसर ने व्यवस्था का भार संभाला। इस प्रकार 21 से 26 सितम्बर के बीच विभिन्न राज्यों में 4 शिविर संपन्न हुए।

28 सितंबर से 1 अक्टूबर तक 11 प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर संपन्न हुए। नागौर जिले के जोधियासी में उगमसिंह आशापुरा के संचालन में 121 शिविरार्थियों ने प्रशिक्षण लिया। सरपंच करणसिंह के नेतृत्व में ग्रामवासियों ने व्यवस्था संभाली। आयुवान निकेतन कुचामन में 102 स्वयंसेवकों ने प्रशिक्षण लिया। बीकानेर के सारूण्डा में खींवसिंह सुल्ताना के संचालन में 151 स्वयंसेवकों ने प्रशिक्षण लिया। नागौर जिले के खानपुर में विक्रमसिंह ढींगसरी के संचालन में नंदसिंह बेड़, दशरथसिंह ढींगसरी, तेजवीरसिंह ढींगसरी आदि के सहयोग से शिविर हुआ। जैसलमेर के डेलासर में तारेन्द्रसिंह जिंझनियाली के संचालन में अजासर, लोद्रवा, रणधा, ऊण्डा, बडोड़ागांव, सांवला, रिड़मलसर, सिहड़ार सांखला, सौकड़ा, सोनू, कनोड़ा, मूलाना, दिधू, कर्मा, भोजासर, सोढ़ाकोर डेलासर आदि गांवों के 180 शिविरार्थियों ने प्रशिक्षण लिया। जालोर के राऊता में राऊता, चैनपुरा, देता, सुराणा, दूदवा, दहीवा, सांगाणा, जीवाणा, भाटा सहित बागोड़ा, सायला, गुड़ामालानी क्षेत्र के 102 शिविरार्थियों ने अर्जुनसिंह देलदरी के संचालन में प्रशिक्षण लिया। सिरोही के आबूरोड क्षेत्र के सांगवाड़ा में हीरसिंह लोड़ता के संचालन में शिविर हुआ। बाड़मेर के जैसिंधर में उदयसिंह देदुसर के संचालन में व महाबार में राजेन्द्रसिंह भिंयाड़ द्वितीय के संचालन में शिविर हुआ। दोनों स्थानों पर 400 के लगभग स्वयंसेवकों ने प्रशिक्षण लिया। जैसलमेर के सोनू में इसी दौरान शिविर संपन्न हुआ। पोकरण के भैसड़ा में बाबूसिंह बेरसियाला के संचालन में शिविर हुआ।

खेल के बाद चर्चा

(पृष्ठ चार का शेष)

अधिकार जताने...

यदि यह दायित्व भाव आएगा तो फिर वह व्यक्ति सलाह नहीं देगा, अपना आग्रह लादने पर उतारू नहीं होगा बल्कि कदम से कदम मिलाकर चल पड़ेगा और जो साथ में चलता है उसको आग्रह प्रकट करने की आवश्यकता नहीं होती बल्कि स्वतः ही वे आग्रह लागू होते जाते हैं। इसलिए आवश्यकता है कि जो सामाजिक संस्थाएं अपने-अपने दायरे में काम कर रही हैं हम उनके मालिक बनने की अपेक्षा सहयोगी बनने का प्रयास करें। उन पर अपने आग्रह लादने की अपेक्षा उनके आग्रहों को स्वीकार करना शुरू करें। अपने अकर्मण्य ज्ञान को थोपने की अपेक्षा कर्म द्वारा अपने अनुभवों से अर्जित ज्ञानवान लोगों के साथ चलने का प्रयास करें तो कुछ सार्थक होना संभव है अन्यथा तो केवल और केवल शिकायतें बचेंगी और ऐसे शिकायत करने वाले हर बार फिर ऐसे ही अवसरों की तलाश में रहेंगे जब वे कोई मीन मेख निकाल सकें। लेकिन कर्मरत लोगों को इन मीन मेख की परवाह किए बिना अपने कर्म के श्रोत को प्रवाहित रखना चाहिए क्योंकि पूज्य तनसिंह जी का मार्गदर्शन है, 'चलते चलते हो गई है सब शिकायत बेजुबां।'

शहीद उदयसिंह सोढ़ा का बलिदान दिवस

जैसलमेर जिले के धायसर गांव के शहीद उदयसिंह सोढ़ा का 17वां बलिदान दिवस 27 सितंबर को उनके गांव धायसर में राज्य सैनिक कल्याण बोर्ड के अध्यक्ष प्रेमसिंह बाजोर के मुख्य आतिथ्य में मनाया गया। इस अवसर पर अमर शहीद उदयसिंह सोढ़ा राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय के मुख्य द्वार का लोकार्पण किया गया एवं शहीद की माता सिरे कंवर का सम्मान किया गया। विधायक छोटूसिंह भाटी सहित अनेक गणमान्य समाज बंधु, जनप्रतिनिधि एवं अधिकारी इस अवसर पर उपस्थित रहे।

श्रद्धेय आयुवानसिंहजी की जयंती मनाई

संघ के द्वितीय संघ प्रमुख श्रद्धेय माडसाब आयुवानसिंह जी हुडील की 97वीं जयंती भारतीय पंचांग अनुसार अश्विन शुक्ला पंचमी को विभिन्न शाखाओं में मनाई गई। जैसलमेर संभाग की चांघन शाखा में प्रांत प्रमुख तारेन्द्रसिंह के नेतृत्व में जयंती मनाई गई जिसमें चन्द्रसिंह मूलाना, भोमसिंह चांधन, कंवराजसिंह चांधन, शंभूसिंह भोजासर आदि ने आयुवानसिंह जी के जीवन, संघ की संस्कारमयी कार्यप्रणाली, गीतोक्त क्षात्रधर्म आदि विषयों पर अपने विचार रखे। जयंती कार्यक्रम के पश्चात 28 सितंबर से होने वाले डेलासर शिविर हेतु सांवला, सागरा, कर्मा सोढ़ाकोर, धायसर, डेलासर, दवाड़ा, मूलाना आदि गांवों में संपर्क किया। बालोतरा के वीर दुर्गादस राजपूत छात्रावास एवं विवेकानंद हॉस्टल शाखा में जयंती मनाई गई। उदयपुर की बी.एन. परिसर शाखा में जयंती मनाई गई जिसमें संभाग प्रमुख भंवरसिंह बेमला ने पूज्य श्री के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डाला।

मूलाना शाखा में शिविर की चर्चा

विगत 24 वर्ष से जैसलमेर के मूलाना गांव में लग रही नियमित शाखा का 28 सितंबर को अधिकतम संख्या दिवस मनाया गया जिसमें सह प्रांत प्रमुख रतनसिंह बडोड़ा गांव ने आगामी प्रा.प्र.शि. डेलासर के लिए चर्चा की और शाखा के 25 स्वयंसेवकों ने शिविर में जाने की हामी भरी।

उदयपुर, पीपलखेडा और महरोली में स्नेहमिलन संपन्न

17 सितम्बर को जयपुर संभाग के दौसा प्रान्त में दो स्नेहमिलन सम्पन्न हुए। बांदीकुई मंडल के उदयपुर गांव एवं महवा मण्डल के पीपलखेड़ा गांव में आयोजित इन दोनों स्नेहमिलनों में दौसा प्रान्त प्रमुख मदनसिंह बामणिया उपस्थित रहे। मंगलाचरण एवं प्रार्थना के साथ कार्यक्रमों का शुभारम्भ हुआ। प्रान्त प्रमुख ने कार्यक्रम में उपस्थित बंधुओं को संघ की स्थापना, उद्देश्य, कार्यप्रणाली आदि की सामान्य जानकारी प्रदान की। उन्होंने बताया कि नैतिक और चारित्रिक पतन के इस दौर में संघ हमारी विरासत को संभालने का कार्य कर रहा है। संघ में आप अपने उस गौरवशाली इतिहास में भी परिचित होते है, जिसे स्कूली शिक्षा में हमें पढ़ाया नहीं जाता अथवा विकृत करके पढ़ाया जाता है। मदनसिंह ने इसी दौरान प्रान्त की विभिन्न शाखाओं का निरीक्षण भी किया एवं शिक्षण प्रमुखों, शाखा प्रमुखों एवं स्वयंसेवकों को आवश्यक दिशा-निर्देश प्रदान किए। उत्तर-पूर्व जयपुर (ग्रामीण) प्रान्त के महरोली गांव में भी 17 सितम्बर को स्नेहमिलन सम्पन्न हुआ, जिसमें केन्द्रीय कार्यकारी गजेन्द्रसिंह आऊ उपस्थित रहे। मंगलाचरण एवं प्रार्थना के पश्चात् गजेन्द्रसिंह ने उपस्थित जनों को संघ का विस्तृत परिचय देते हुए उनसे संघ को समझने के लिए संघ से सक्रिय रूप से जुड़ने का आह्वान किया। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में मातृ शक्ति भी उपस्थित रही।

प्रतिष्ठान का श्रीगणेश

विजयादशमी के दिन जोधपुर में संघ प्रमुख श्री द्वारा संघ के स्वयंसेवक भंवरसिंह पीपासर के प्रतिष्ठान 'प्रेम पोशाक' का श्रीगणेश किया गया। इससे पूर्व 28 सितम्बर को जयपुर में स्वयंसेवक महेन्द्रसिंह दौलतपुरा के प्रतिष्ठान 'नीलम परिधान' का शुभारंभ किया।

सवाईसिंह धमोरा को श्रद्धांजलि

श्री क्षत्रिय युवक संघ के वयोवृद्ध स्वयंसेवक, इतिहासकार, साहित्यकार एवं पत्रकार सवाईसिंह धमोरा की स्मृति में 24 सितम्बर को राजपूत सभा जयपुर में श्रद्धांजलि सभा आयोजित की गई। माननीय संघ प्रमुख श्री ने इस अवसर पर सवाईसिंह जी के इतिहास लेखन, भूस्वामी आंदोलन आदि में सहयोग का उल्लेख करते हुए उनके साथ बिताये क्षणों को याद किया। कार्यक्रम के अध्यक्ष वरिष्ठ स्वयंसेवक नारायणसिंह खेजड़ोली ने उन्हें सतत कर्मरत समाज सेवी बताया। राजपूत सभा अध्यक्ष गिरिराज सिंह लोटवाड़ा ने राजपूत सभा में उनके सहयोग को याद किया। भवानी निकेतन शिक्षा समिति के संपतसिंह धमोरा ने पत्रकारिता के क्षेत्र में उनके योगदान का स्मरण किया। इस अवसर पर वरिष्ठ स्वयंसेवक महावीरसिंह सरवड़ी के अलावा राजपूत सभा, भवानी निकेतन, करणी सेना, दुर्गादल आदि सामाजिक संगठनों के पदाधिकारी व समाज बंधु उपस्थित रहे। कार्यक्रम का आयोजन आयुवान स्मृति संस्थान द्वारा किया गया।

विकास परिषद का राजपूत परिषद में विलय

मुंबई में प्रवासी राजपूतों द्वारा गठित राजस्थान राजपूत परिषद में विगत वर्षों में गठित राजस्थान विकास परिषद का विलय हो गया। 17 सितम्बर को बोरीवली स्थित राजपूत सभा भवन में दोनों संस्थानों के पदाधिकारियों की बैठक में सर्व सम्मति से यह निर्णय लिया गया। बैठक में हुए निर्णय में राजस्थान विकास परिषद के सभी ट्रस्टी राजस्थान राजपूत परिषद के ट्रस्टी माने जाएंगे एवं विकास परिषद की कार्यकारिणी को राजपूत परिषद की कार्यकारिणी में सम्मानजनक स्थान दिया जाएगा। उल्लेखनीय है कि लगभग आठ वर्ष पूर्व सामान्य मतभेदों के चलते राजस्थान राजपूत परिषद से अलग राजस्थान विकास परिषद का गठन किया गया था। विलय के अवसर पर दोनों संस्थाओं से रामावतारसिंह, रघुनाथसिंह सराणा, रतनसिंह तूरा, खेतसिंह मेड़तिया, दिलीपसिंह सुल्ताना, नीरसिंह सिंघाणा आदि पदाधिकारियों सहित सैंकड़ों कार्यकर्ता उपस्थित थे।

शाखा के मैदान से

भारत के दक्षिणी छोर केरल के त्रिशूर शहर में लगने वाली साप्ताहिक शाखा के स्वयंसेवक।

नौ स्थानों पर नौ दिन यज्ञ

संघ के अहमदाबाद ग्रामीण प्रांत के प्रांत प्रमुख दीवानसिंह काणेटी के निर्देश पर नवरात्रि के दौरान स्वयंसेवकों ने नौ दिन अलग अलग शाखाओं में ग्रामवासियों के सहयोग से यज्ञ किए। प्रथम दिन खोड़ा गांव में महिपालसिंह खोड़ा के घर 101 समाज बंधुओं ने, दूसरे दिन साणंद शहर की मंगलतीर्थ सोसायटी में महावीरसिंह सांणद के घर 120 लोगों ने, तीसरे दिन चेखला के अनिरूद्ध चेखला के घर 80 लोगों ने, चौथे दिन पींपण गांव के आम चौहटे पर 110 लोगों ने, पांचवे दिन काणेटी की बाल शाखा में, छठे दिन युवा शाखा काणेटी में व सातवें दिन महिला शाखा में सामूहिक यज्ञ किए। 8वें व 9वें दिन काणेटी गांव में सहयोगी समाज बंधुओं के घर सामूहिक यज्ञ किए गए। गुजरात में भावनगर प्रांत में भी इसी प्रकार शाखाओं में सामूहिक यज्ञ किए गए। दुर्गाष्टमी के दिन राजस्थान की विभिन्न शाखाओं के अलावा मुंबई, सूरत आदि स्थानों की शाखाओं में भी सामूहिक यज्ञ कर देवी की अर्चना की गई।

बालिका माध्यमिक प्रशिक्षण शिविर सिवाणा

श्री कल्ला रायमलोत राजपूत बोर्डिंग हाउस सिवाना में 27 सितंबर से 3 अक्टूबर तक बालिका माध्यमिक प्रशिक्षण शिविर संपन्न हुआ। शिविर में सिवाणा, पादरू, सिणेर, मीठा, धनवा, कुशीप, देवन्दी, पादरड़ी, काठाड़ी, धीरा, भाटा, बाड़मेर शहर, थापन, इन्द्राणा, कुण्डल, जालोर शहर, बालोतरा आदि स्थानों से 143 बालिकाओं ने प्रशिक्षण लिया। शिविर का संचालन महिला विभाग के प्रभारी जोरावरसिंह भादला एवं वरिष्ठ स्वयंसेवक अमरसिंह अकली के निर्देशन में रश्मि कंवर देलदरी ने उषा कंवर पाटोदा, सीमा कंवर भुरटिया, मीनाक्षी कंवर जिंझनियाली, रीटा कंवर देवलिया, सरिता कंवर मवड़ी आदि के सहयोग से किया। स्वागत कार्यक्रम को संबोधित करते हुए शिविर संचालिका ने कहा कि स्त्री पुरूष जीवन रथ के दो पहिए हैं, एक के बिना दूसरा अधूरा है। इसी बात को ध्यान रखते हुए माननीय संघ प्रमुख श्री के निर्देशानुसार 90 के दशक में श्री क्षत्रिय युवक संघ की महिला शाखा प्रारंभ हुई एवं प्रशिक्षण शिविर हुए। संघ समाज में शिक्षण का काम करता है और माता संतान की प्रथम गुरू होती है ऐसे में माताओं को क्षात्रवृत्ति एवं संस्कारों का प्रशिक्षण देना आवश्यक है ताकि वे आदर्श माँ बनकर आदर्श क्षत्रिय तैयार कर सकें। आपको शिविर के दौरान पद्मिनी, मीरां, पन्नाधाय, सीता, सावित्री आदि बनने का अभ्यास करवाया जाएगा, आवश्यकता है कि आप जागरूक होकर सहयोग करें एवं अवसर का लाभ उठायें।

पाली में नवरात्रि स्नेहमिलन

पाली के झाला उपवन में 24 सितंबर को नवरात्रि स्नेहमिलन रखा गया जिसमें 81 सरपंचों, 3 जिला परिषद सदस्यों व 25 पंचायत समिति सदस्यों का सम्मान किया गया। इस अवसर पर नांद गांव पुष्कर के संत समताराम जी ने छत्तीस कौम की सेवा में जुटने का आह्वान किया। उन्होंने वर्तमान को बेहतर ढंग से जीने की पैरवी की। इनके अलावा मुख्य अतिथि मेघराज सिंह रोयल, भंवरसिंह मंडली, नारायणसिंह आकड़ावास, चन्द्रवीरसिंह आदि ने अपने विचार व्यक्त किए। सरपंच संघ के अध्यक्ष समदरसिंह बांता ने सरपंचों को लोकतंत्र की नींव बताया। पूर्व जिला प्रमुख खुशवीरसिंह जोजावर, मारवाड़ जंक्शन प्रधान सुमेरसिंह, सिद्धार्थसिंह रोहट, गजेन्दसिंह कालवी आदि ने भी समाज में संगठन की आवश्यकता जताते हुए ऐसे कार्यक्रमों की आवश्यकता जताई। कार्यक्रम का संयोजन अजयपाल सिंह हेमावास ने किया। अंत में संत समतारामजी को स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मान किया गया।

श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास (मालिक) के लिए मुद्रक व प्रकाशक लक्ष्मणसिंह द्वारा गजेंद्र प्रिन्टर्स, सांगों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर-302003 (दूरभाष 2313462) से मुद्रित एवं ए/8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर- 302012 **(दूरभाष: 2466353 व 2466387)** से प्रकाशित। सम्पादक- लक्ष्मणसिंह। Email:- pathprerak1997@gmail.com, Web site:- www.shrikys.org